जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराज

(शिक्षा समन्वित जीवनी)

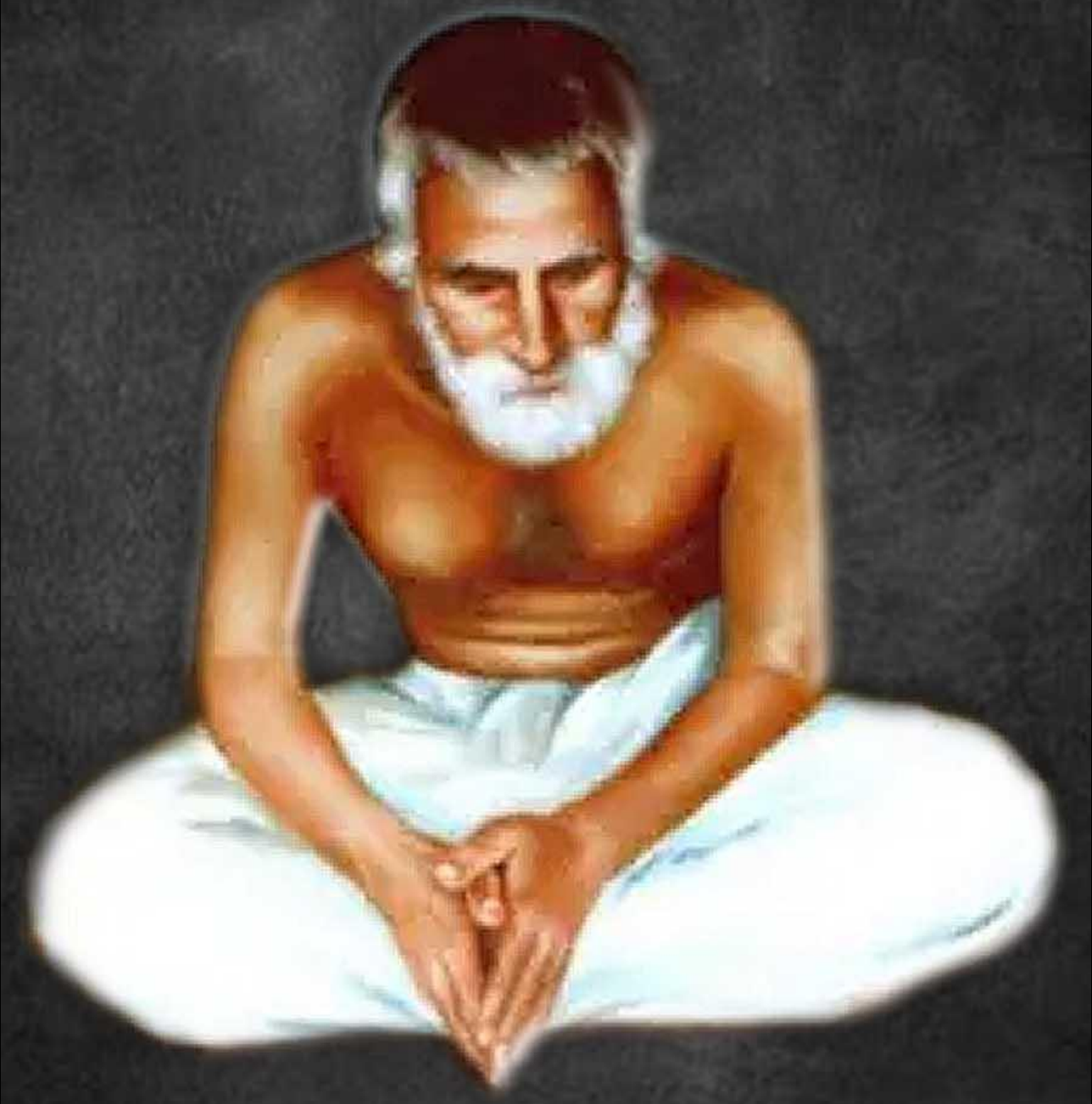

श्रील प्रभुपाद भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर जी की दिव्य लेखनी से संकलित

SGD

कपटतायुक्त कृपा - याचना

श्रीलगुरुदेव

प*** हरिभजन करने के छल से श्रीधाम मायापुर में श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी प्रभुपाद के पास आया। श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज के पास एक मनहूस व्यक्ति आता जाता था लेकिन श्रील बाबाजी महाराज उसको नज़रान्दाज़ कर देते थे। श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी प्रभुपाद श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज के अत्यन्त

प्रिय हैं इसलिए श्रील सरस्वती प्रभुपाद से वह अमांगलिक व्यक्ति बार बार निवेदन करता कि यदि श्रील सरस्वती ठाकुर श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज से थोड़ा कह दें, तभी वे उसके ऊपर कृपा कर सकते हैं। इस प्रकार बारम्बार प्रार्थना सुनकर एक दिन श्रील सरस्वती ठाकुर ने श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज को उस अमांगलिक व्यक्ति का निवेदन बताया और उस पर कृपा करने के लिए अनुरोध किया। श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज ने श्रील सरस्वती ठाकुर को उस अमांगलिक व्यक्ति की कपटता की

बात बताते हुए कहा कि श्रील सरस्वती ठाकुर के समान ऐकान्तिक निष्कपट वैष्णव का इस प्रकार के कपटी व्यक्ति के लिए अनुरोध करना अच्छा नहीं हुआ। इस सम्बन्ध में श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज ने श्रील सरस्वती ठाकुर को बहुत बातें बताई। कुछ समय बाद श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज ने अपने दोनों चरणों से प्रचुर पद धूलि (पद - रज) लेकर श्रील सरस्वती ठाकुर के मस्तक के ऊपर लेपन करते हुए प्रचुर आशीर्वाद किया एवं कहा आप नित्यानन्द - अभिन्न विग्रह हैं, इसीलिए आपका हृदय सभी जीवों

के दुःख से पिघल जाता है; लेकिन प*** बहुत कपटी और पाखण्डी है। वह अपना मंगल नहीं चाहता। मेरे साथ छल करने के लिए मेरे से कृपा की भीख माँगने का ढोंग करता है।"

प*** ने सचमुच एक दिन पाखण्ड का चरम आदर्श दिखाया। श्रील प्रभुपाद जी को दिखाकर एक मरे हुए व्यक्ति की खोपड़ी में जल डालकर उसे पीते हुए कहा, “देखिए मैं गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज से अधिक वैरागी हूँ। वे क्या मृत व्यक्ति की खोपड़ी में जल पी सकते हैं?" यह सुनकर श्रील सरस्वती

ठाकुर कहने लगे,— “पारखण्डी! तू इसी समय दूर हो जा। इस प्रकार की घृणित अघोरी हरकत मेरे प्रभु क्यों करेंगे? तू पिशाच है, पाखण्डी है। तभी इन सब कामों में तेरी रुचि हुई है। तेरा नरक में जाना सुनिश्चित है।" महान पुरुषों के चरणों में अपराध करने और दम्भ के फल से प*** अवैध स्त्रीसंगी बनकर और अवैध कामिनी के केश विन्यास के लिए नारियल का तेल संग्रह करने के लिए भिक्षा माँगना आरम्भ कर दिया।

श्रीलगुरुदेव